Aviagen™ Brief

ब्रायलर पक्षी का प्रबंधन

पोल्ट्री फार्मिंग उद्योग मे लगातार हो रहे आनुवांशिकी शोध व उन्नति से पक्षी अपने न्यूनतम कलिंग वजन को और कम करता जा रहा है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि एक मुर्गी के जीवन काल में ब्रुडींग पिरीयडसबसे लंबा बिताये जाने वाला समय है। इसलिए ''न्यूनतम वजन''(कलिंग) वाले ब्रायलर की फार्मिंग के समय ब्रुडींग प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए 1.5-1.8 किग्रॉ (32 दिन आयु) वजनी पक्षी के ब्रुडींग में 7 दिन का समय लगता है जो कि इसकी आयु का 22% है।

चित्र : 01– ब्रुडींग एवं न्यूनतम कलिंग वजन में सम्बन्ध

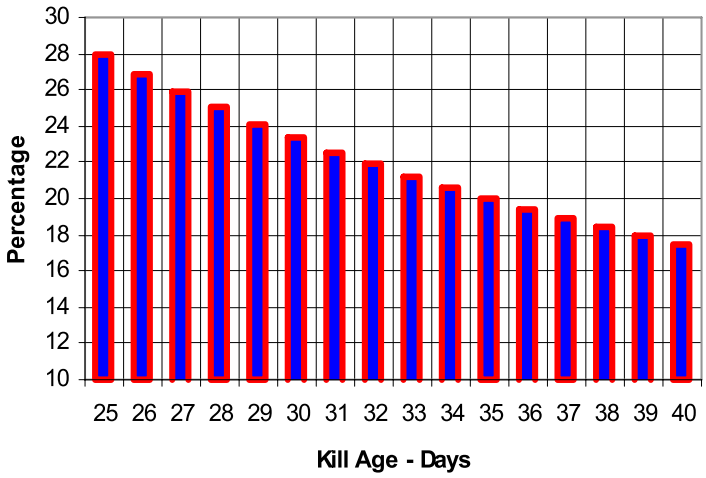

यह आलेख किसी चूजे के जीवन के पहले 7 दिनों में ध्यान देने वाली बातें एवं महत्वपूर्ण बिन्दुओं का विवरण देती है, जो कि ''न्यूनतम कलिंग वजन'' वालेब्रायलर के लिए है। इनमें निम्न बिन्दुओं का वर्णन हैं।

चुजों की आपूर्ति और योजना

❖ ब्रुडिंग

- चूजा शेड की बनावट और प्लेसमेंट
- वातावरण और तापमान
- पानी और दाना
- क्रॉप फिल

❖ 7 दिनों मे वजन और परिक्षण

उपरोक्त बिंदुओं के सही प्रबंधन से हि एक अच्छे व सन्तुलित ब्रायलर पक्षी का उत्पादन होता है जो कि ब्रायलर की ग्रोथ का सबसे अच्छा प्रदर्शन करे।

❖ चूजो की आपूर्ति एवं योजना

★ पैरेंट स्टॉक के पक्षीयों की उम्र ब्रायलर पक्षी की आपूर्ति की योजना बनाना एक महत्वपूर्ण शुरूवात है जो की एक दिवसीय समान चूजों (DOC) का वितरण करने से होगी। यह एक संतुलित प्रदर्शन करने योग्य ब्रायलर को पैदा करने की ओर सबसे महत्वपूर्ण कदम है। नये पैरेंट के चूजों के स्टॉक से पुरानें स्टॉक को अलग रखना चाहिए। नये पैरेंट स्टॉक, जिनकी उम्र 32 सप्ताह से कम हो वर्ग -1 में, 32-45 सप्ताह के उम्र के पैरेंट स्टॉक को वर्ग -2 एवं 45 सप्ताह की उम्र से अधिक वाले पैरेंट स्टॉक को वर्ग -3 में रखना चाहिये। यथासम्भव इस प्रकार व्यवस्था की जाये प्रति शेड में एक ही फ्लॉक के पक्षी हो। नये व पुराने चूजों को नही मिलाया जाना चाहिये, अन्यथा मिलाने की परिस्थिति में चूजो की साइज मे युनिफार्मिटी नहीं रहेगी और उनमें पानी व दाने को लेकर भी संघर्ष देखने को मिलेगा। अगर अलग फ्लॉक के चूजों को अलग अलग रखना संभव नही है तो चूजों को एक ही शेड के अलग अलग भाग में ब्रुडींग करना चाहीये।

★ हैचरी से फार्म तक परिवहन

शुरूवाती दिनों में चूजो को दाने का अनावरण करने से उनके योकसेकके न्युट्रीयंटस की उपयोग्यता बढती है, इससे इनकीं पाचन तंत्र का संतुलित विकास एवं आंतीय रोग प्रतिरोधक क्षमता (Gut Immunity) बढती है। फलस्वरूप चूजों की बेहतर शुरूवाती विकास मजबूती एवं समानता के साथ होती है।

चूजों का परिवहन अच्छे से योजनाबद्ध तरीके से करना चाहीये। चूजों के परिवहन का आदर्श समय 6-8 घंटे होता है। (हैच होने के बाद) एक चूजा 24 घंटे बिना दाने और पानी के 4 ग्राम वजन खो सकता है। यदि वाहन आर्द्रता–तापमान नियत्रंण युक्त ना हो या वितरण में उपरोक्त से ज्यादा समय लगता हो, तो गर्मीयों में वजन में गिरावट का आंकडा बढ भी सकता है। हैच के समय व परिवहन के समय में समन्वय बिठा कर चूजो को डिहाइड्रेशन और स्ट्रेस से बचाया जा सकता है।

❖ ब्रुडिंग

★ ब्रुडींग शेड की तैयारी और प्लेसमेंट

चूजो के आने से पहले ही ब्रायलर शेडों की तैयारी कर लेनी चाहिए जिससे शीघ्र ही ब्रुडींग क्षेत्र मे स्थापित किया जा सके। ब्रुडींग का लेआउट इस बात पर निर्भर करता है कि गर्मी देने वाली प्रणाली पूरे ब्रायलर शेड में है या कुछ विशेष बिंदुओ पर (चित्र 2 एवं 3 देखें।)

चूजो के आगमन के पश्चात जितना जल्दी हो सके, ब्रुडींग क्षेत्र में, सावधानीपूर्वक उन्हें अखबार के ऊपर रख देना चाहिए। अखबार रखने की वजह से चूजों को लिटर खाने से रोका जा सकता है। इससे चूजों का फीडींग क्षेत्र भी अधिक से अधिक बढाया जा सकता है। ब्रुडींग क्षेत्र भी 25% से लेकर 100% तक अखबार से ढका होना चाहिए। अखबारों की मात्रा इस बात पर निर्भर करेगी कि ब्रायलर शेड में ब्रुडींग पूरे शेड में है या कुछ विशेष बिंदुओ पर तथा उसमें किस प्रकार का लिटर प्रयोग में लाया जा रहा है। दाना अखबारो पर चूजो के आगमन के पूर्व ही वितरित कर देना चाहिए।

जब शेड का आधा हिस्सा ही ब्रुडींग के लिये उपयोग किया जाता है चूजों की डेनसीटी (3-4चूजा प्रति वर्ग फिट) बढाते हुये, तब इस परिस्थिती में फीडींग और ड्रींकींग स्पेस से थोडा सा भी समझोता नही करना चाहीये।

उचित होगा की चूजों के स्थापन के समय नमूनों के तौर पर, कुछ चूजो का वजन किया जाये। जिससें चूजों की वास्तविक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकें।

★ तापमान और वातावरण

यह महत्वपूर्ण है की शेड का तापमान उचित हो ताकी पक्षी चुस्त हो और उनमें दाना खाने की क्षमता का विकास हो। ब्रुडींग क्षेत्र के तापमान को दो भागों में करना चाहिए। 1- हवा का तापमान जो चूजों की उँचाई एवं फीडर व ड्रिकंर के पास से मापी जानी चाहिए 2- लिटर का तापमान।

चूजो के स्थापना समय वायु का तापमान 30°C व लिटर का तापमान 28°C-30°C होना चाहिये। शेड का तापमान स्थानिय वातावरण से प्रभावित होता है और चूजो द्वारा ग्रहीत की जाने वाली प्रभावी तापमान से संबधित होता है। उमस (RH) में बदलाव चूजों द्वारा महसूस किये जाने वाले प्रभावी तापमान को प्रभावित करता है। अधिक RH बाश्पीकरण द्वारा उश्माक्षय को कम कर देता है जिससे प्रभावी तापमान बढ जाता है। कम RH प्रभावी तापमान को कम कर देता है। जब कभी उमस (RH) कम हो तो RH बढाने का प्रयास करना चाहीये। चूजो की ब्रुडींग के लिये 60–70% RH आदर्श माना जाता है। शुश्क और गर्म स्थानों पर उमस (RH) बनाना कठीन होता है। उमस बनाने के लिये ह्युमिडीटीफायर यंत्र या उच्च दाब फागर्स (700 – 1000 PSI व 5 मायक्रान साइज के बुंद युक्त) का उपयोग करना चाहिये। इसके अलावा सतह को नमीयुक्त कर के RH बढाया जा सकता है। शेड की तापमान सेटींग इस प्रकार हो की RH 70% से ज्यादा या 60% से कम होने पर तापमान में जरुरी परीवर्तन हो।

अगर हवा का तापमान सही हो, तो लिटर तापमानसही है ऐसा माना जा सकता है। जब तक चूजो के आगमन के 24 घंटे पहले आवश्यक तापमान नहीं मिलता, तब तक लिटरएवं हवा के तापमान मे काफी अन्तर होताहैं। यह उन क्षेत्रों मे ज्यादा मिलता है, जहाँ प्रतिदिन वातावरणीय तापमान मे काफी उतार–चढ़ाव होता हो। अगर चूजे लिटर पर खड़े है जिसका तापमान 28°C कम हो, तों चूजे काफी ठंडा महसूस करते है और इसिसे समस्या की शुरूवात होती है । चूजो का व्यवहार ही सही सूचक है, इसीसे सही तापमान का अनुमाम लगाना चाहीए और पहले 7 दिनो तककाफी गंभीरता से नियंत्रित करना चाहिए।

चित्र : ४ चित्रः 5

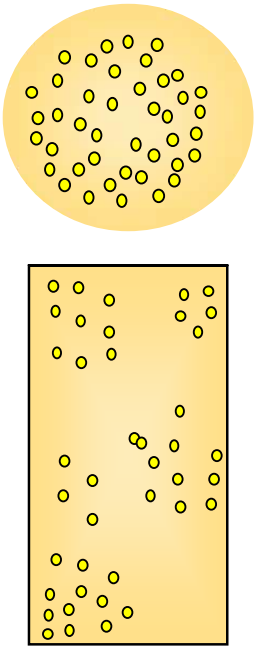

★ **दानाऔर पानी**

चूजो केआगमन के तुरंत बाद उन्हें दानाऔर पानी उपलब्ध करवाना चाहिये। इस समय इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि, दानाऔर पानी के लिये पर्याप्त जगह उपलब्ध हो। इस हेतु वैकिल्पक फिडर व ड्रींकर्स की व्यवस्था की जानीचाहिये। (चित्र 6 देखे)

बुडिंग क्षेत्र में प्रकाश की पर्याप्त तीव्रता चूजो को ना केवल दानाऔर पानी खोजने में मदद करेगी बल्कि चूजों को चुस्त भी रखेगी। पहले 7 दिन तक 30 से 40 lux प्रकाश का उपयोग किया जाना चाहिये। (Fiqure 6) थोडी मात्रामें दाने का वितरण हर 2–3 घंटो में अखबारों पर करते रहना चाहिये, विशेषकर पहले 24 घंटो में। इस तरह कादानाचूजे का स्वाभाविक चुगने का व्यवहार प्रोत्साहीत करेगा।

3 दिनों के बाद चूजो को फिडर्स से दाना देना चाहिये और अखबार को हटा देना चाहिये। इस स्थिती में दाने का प्रकार बहुत महत्वपुर्णहोता है औरदाना उच्च क्वालिटी का क्रंम्बस ही होना चाहिये। मॅनुवल फीडर्सचूजो की पहुँच में होने चाहिये, विशेषकर उसकी गघराई कम होनी चाहिये। फीडर मे धुल मिट्टी–इत्यादि ना जमा हो, इसलिए इसें प्रतिदिन खाली कर–साफ करना चाहिये।

पहीले 7 दिन चूजो को अतिरीक्त ड्रींकर्स की उपलब्धता होनी चाहिये। ये गरमी के मौसम और जहा बेल ड्रींकर्स का उपयोग किया जाता है वहा पे यह जरुरी है।ड्रींकर्स को उचित जगह लगाना चाहिये जिसे पहले 24 घंटे चूजो को पानी पीने के लिए 1 मी से जादा जाना ना पडे। ताजा और अच्छा पानी की निरंतरआपुर्ति होनीचाहिये। पानी को थंडा रखने का हर संभव प्रयास करना चाहिये जैसे की ड्रींकर लाइंस को फ्लश करना, कुल पॅड्स का उपयोग करना, टॅकर्स और ड्रींकर्स को भूमिगत और इंसुलेटिंग रखना चाहिये।

पूरे ड्रींकर्स पूरे फ्लॉक को उपलब्ध होना चाहिये। प्रथम 24 घंटे में निप्पल ड्रीकंर्स की ऊचाँई कोचूजो की आँखो के बराबर होनी चाहिये। इस के बाद निप्पल ड्रींकर्सकी उचांई ऐसी हो ताकी चूजे पानी पी सके। इस बात को ध्यान रखें कि पानी पीते समय चूजों की पीठ जमीन के साथ 45° का कोण बनाए। जैसे–जैसे चूजो कि ऊचाँईबढती है, आवश्यकतानुसार ड्रिंकर्स की भी ऊचाँईबढानी चाहिए। 8–10 चूजों के लिए 1 निप्पल ड्रींकर पर्याप्त होता है। जबकि गरमी के मौसम में 1 बेल ड्रिकर, 60 चूजों कों लिए पर्याप्त होता है। ऐसा करने से ग्रोइगं पिरियड मे चूजों को पानी पिने के लिए उचित ड्रिंकीग स्पेस मिलेगी।

★ **क्राप फिलिंग (चूजो की भूक की निगरानी)**

चूजे जब पहली बार दाना खाना प्रारंभ करते है, तो अच्छेदाने का सेवन करना पंसद करते है। यदि चूजे अच्छे से दाना व पानी, खा–पी रहे है, तो उनका क्रॉप दाना और पानी के मिश्रण से भरता है। प्रथम 48 घंटे में चूजो की जेंटल हॅडलिंग से ये संकेत मिल सकता है कि चूजो ने सही से दाना –पानी का सेवन किया है या नहीं । चूजो काक्रॉपभरा हुआ और गोल होना चाहियेतथाउसका भराव युक्त गोलाई भी महसूस होनी चाहिये (चित्रः7)। यदि क्राप का भराव सख्त है औरफीड की मूल बनावट को महसूस किया जा सकता है तो चूजो ने पानी का पर्याप्त मात्रा में सेवन नही किया है यह अनुमान लगाया जा सकता है। क्राप फिलिंग की निगरानी प्रथम 12 घंटे में करना चाहिये तथा पहले के 2 घंटो मे की गई निगरानी से ये मालूम चल जायेगा कि चूजे ने दाना–पानी ठीक से ग्रहण किया है या नहीं।

60 और 72 घंटो के निरीक्षण बहुत आवश्यक है जिसे पता चल पाएगाकि चूजो ने दाना–पानी पर्याप्त मात्रा में खाया की नही।

★ वेंटिलेशन (Ventilation)

चूजो को अच्छी हवा मिलना बहुत जरूरी है। थोडे से समय के लिये भी हवा में अमोनिया की अधिक मात्रा से चूजों के आहार कुशलता व बॉडी वेट गेन पर नकारात्मक प्रभाव पडता है और चूजो की ऑखों को नुकसान, हद्य व श्वशन प्रणाली को भी प्रभावित कर सकता हैं।

चूजो को न्युनतम हवा का बहाव 0.10 - 0.20 CFM / चूजा / मिनट या फिर 0.16 - 0.4M^3 / चूजा / घंटा होनी चाहिए। यह बाहर के तापमान तथा शेड के अन्दर की हवा कि गुणवता पर निर्भर करता है। अच्छी शुरूआत तथा अच्छे वातावरण के लिए हवा का बहाव 30 ft / min (0.15 m/sec) रखना चाहिये।

★ सातवें दिन का वजन तथा सात दिनों का निरिक्षण

जब ब्रायलर पक्षी का उत्पादन कम भार के पक्षी (तंदुरी / मिडियम) के रूप में किया जाता हो, तो उसकी शुरूवात तथा 7 वे दिन बॉडी वेट महत्वपूर्ण होता है। पहले कुछ दिनो का उदेश्य चूजो को पर्याप्त मात्रा में दाना और पानी का वितरण होता है। सुरुवाती दिनों में दाना व पानी अति महत्वपुर्ण है।अगर इस समय चूजो को सीमित दाना और पानी दिया जाये, चाहे वो प्रबधंन द्वारा हो अथवा वातावरण द्वारा, यह चूजो कि वृद्धि पर नकारात्मक प्रभाव डालते है। 7 दिन के ब्रायलर पक्षी कावजन 180gm होना चाहिये।

यदि चूजो का 7 वे दिन वजन 160gm या उससे अधिक है, तो इसे अच्छी शुरूवात कहा जा सकता है। यदि वजन इससे कम है, तोब्रुडींग प्रबंधन और न्युट्रिशनपर पुनर्विचार करना चाहिये।

7 वे दिनप्रत्येक 10 ग्रॅम सुधार बॉडी वेट में अच्छे प्रबंधन के द्वारा 35 वे दिन 40–60 ग्राम तक अतिरिक्त वजन की प्राप्ति की जा सकती है।

चित्र 8

★ सात दिनों के बाद ब्रायलर प्रबंधन

हालांकीतंदुरी / मिडीयम वजन वाले ब्रायलर पक्षिंयों का ब्रुडिंग प्रबंधन महत्वपुर्ण है लेकिन उसके बाद भी ब्रायलर पक्षियों का उचित ध्यान रखना आवश्यक है। विशेषकर ब्रुडिंग के दौरान की गई अच्छी शुरूआत से अधिक वजन प्राप्ती उतनी ही कुशलता सें प्राप्त करने के लिए।

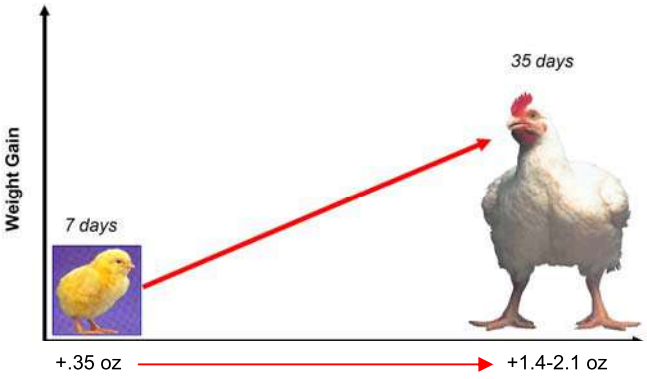

★ वाटर इनटेक (Water Intake)

वातावरण का उच्च तापमान, पक्षियों के पानी पीने की क्षमता पर प्रभाव डाल सकता है। सामान्यतः पानी की मात्रा पक्षियो के आहार की मात्रा का दोगुना होनी चाहिये। गर्मीयों में यह मात्रा 3 गुणा तक हो सकती है।

चित्र 9

★ वातावरण के तापमान का ग्रहण किये जाने वाले पानी की मात्रा पर प्रभाव

यह बहुत जरुरी है की पक्षीयों द्वारा ग्रहण किया जाने वाला दाना–पानी का निरीक्षण प्रतिदिन हो। इस तरह से प्रयास रहे कि, उच्च तापमान पर पक्षी ज्यादा पानी पीये।

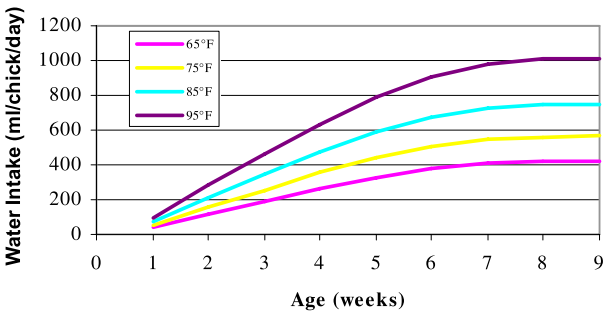

★ 8-14 दिन की उम्रः

इस दौरान तापमान तथा हवा की गुणवत्ता का प्रबंधन अतिआवश्यक है। 14 दिन तकपक्षियों को पुरे ब्रायलर शेड का उपयोग करने की व्यवस्था होनी चाहिये। टनल सिस्टम ब्रायलर शेडों में हवा की तेज गति के कारण पक्षियों को ठंडेपन का खतरा बना रहता है।

दाने का प्रबंधन भी एक महत्वपुर्ण प्रथमिकता होनी चाहिये। इस दौरान दाने के बर्तन में दानों की मात्रा कम करनी चाहिये। इससे दानों में मिट्टी का जमाव नही होगा तथा इसे फीडर के उपर टाईम क्लॉक लगाकर या पेन प्रणाली पर तेज प्रकाश की व्यवस्था के द्वारा भी प्रबंधित किया जा सकता है। इससे पक्षी सीधा फिडर नियत्रंण से दाना उठायेगा तथा इससे दाने के वितरण को नियंत्रित किया जा सकता है। मैनुअल प्रणाली में टयुब फिडर्स में ताजा आहार 2–3 बार देना चाहिये।

जब पक्षियों को क्रम्बस से पैलेटफीड पर शिफ्ट किया जाता है, तब औसतवेट गेन प्रभावित होता है। चयनात्मक फिडींग कम हो इसलिए विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। अगर दाने में जादा मात्रा में पाउडर है तो यह बडी समस्या हो सकती है। इस समय पैलेट का आकार 2–3mm लंबा होना चाहिये।

★ 15 से 21 वें दिन तक

इस समय फीडर प्रबंधन उचित होना चाहिये। ताकि अधिकतम ग्रोथ लिया जा सके। फीड में पावडर कम होना चाहिये। अधिक पावडरवाला फीड फीडींग स्पेस कम कर देता है। यह पक्षीयों द्वारा दाना खाने का समय बढा देता है। जिससे पीछे की पक्षी दाना खाने के लिये प्रतिक्षा करती रहती है। यह स्थिती पीछे की पक्षीयों के लिये फीड रिस्ट्रिक्शन का कारण बनती है। जब की इस समय उन्हे अधिकतम फीडींग की आवश्यकता होती है।पक्षीयों का 1.5 kg वजन होने तक फीडींग जगाह 65 पक्षिया को एक बर्तन (जिसका व्यास 13 इंच हो) देना चाहिये।

22 वें दिन से रिक्तीकरण तक

इस समय पक्षींयो के जीवन में तापमान का भार बढ जाता है। पक्षींयो को अच्छी स्थिती में रखने के लिये वेंटीलेशन और कुलिंग के प्रबंधन काफी जरुरी होता है। पक्षीयो का दाना और पानी अच्छा हो इसलिए वातावरण का प्रबंधन करना चाहिए।अगर पक्षी हीट स्ट्रेस मे है, तो उनका ग्रोथ रेट कम हो जाता है क्योंकी पक्षीयों के हॉपने से उर्जा का छयहोता है और भूख कम हो जाती है।इस समस्या से निपटने के लिए स्टॉकिंग डेंसिटी का प्रबंधन करना जरुरी है। गर्मियों में स्टॉकिंग डेंसिटी वातावरण का तापमान, आर्द्रता और वेंटिलेशन सिस्टम पर निर्भर होता है। पक्षीयों की उम्र और बेचने का वजन को ध्यान में रखते हुए स्टॉकिंग डेंसिटी को समयोजित करना चाहिये।

निश्कर्श

कम वजन (तंदुरी/मिडीयम) ब्रायलर पक्षी के सफलता पूर्वक पालन के लिये छोटी छोटी बातोपर ध्यान देना चाहिए। फ्लाक की औसत उम्र 32 दिन होती है। अतः एक दिन 3% के बराबर होती है। एक दिन भी पक्षी मानक से हटनेपर फ्लाक को वापस मानक में लाने के लिए बहुत कम समय होता है। रॉस ब्रायलर के अनुवांशिक क्षमता को सहयोग करने के लिये उचित प्रबंधन करना चाहिए। पक्षीयों के जैविक आवश्यकताओ को समझकर उचित प्रबंधन तरिकों को अपनाकर डेली वेट गेन को सवंर्धित किया जा सकता है।